

भारत की समुद्री जैव विविधता पर सी एम एफ आर आई का शोध संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में प्रदर्शित किया गया

जनता से रिश्ता वेबडेस्क। वैश्विक जैव विविधता ढांचे पर चर्चा के लिए दक्षिण कोरिया के सियोल में आयोजित संयुक्त राष्ट्र की बैठक में आईसीएआर-केंद्रीय समुद्री मत्स्य अनुसंधान संस्थान (सीएमएफआरआई) के अनुसंधान निष्कर्षों को अपने समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण के लिए भारत की प्रतिबद्धता के रूप में प्रदर्शित किया गया। भारत ने समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र संरक्षण, विशेष रूप से मेंग्रोव और प्रवाल भित्तियों, समुद्री संरक्षित क्षेत्रों की पहचान और टिकाऊ समुद्री मछली पकड़ने को बढ़ावा देने के लिए अपनी प्रतिबद्धता पर जोर दिया।

5-8 सितंबर तक आयोजित सस्टेनेबल ओशन इनिशिएटिव (एसओआई) कार्यशाला का उद्देश्य संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन ऑन बायोलॉजिकल डायवर्सिटी (सीबीडी) के कुनमिंग-मॉन्ट्रियल ग्लोबल बायोडायवर्सिटी फ्रेमवर्क (केएमजीबीएफ) के कार्यान्वयन में तेजी लाना है। SOI एक वैश्विक मंच है जो समुद्री और तटीय जैव विविधता से संबंधित वैश्विक लक्ष्यों और लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए साझेदारी बनाने और क्षमता बढ़ाने का प्रयास करता है।

बैठक में प्रस्तुत की गई भारत की रिपोर्ट में समुद्री जैव विविधता के खतरों को कम करने के लिए पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील क्षेत्रों (ईएसए) के संरक्षण मूल्य का अनुमान लगाने के लिए एक रूपरेखा विकसित करने में सीएमएफआरआई के प्रयासों पर प्रकाश डाला गया। इस प्रयास में कुल 34,127.20 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को ईएसए के रूप में मैप किया गया, जिसमें मेंग्रोव (5,590 वर्ग किमी), मूंगा चट्टानें (1,439), समुद्री घास (518), नमक दलदल (600), रेत के टीले (325), मडफ्लैट (3,558) शामिल हैं। और अधिक।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर), नई दिल्ली के सहायक महानिदेशक डॉ. शुभदीप घोष और आईसीएआर-सीएमएफआरआई के समुद्री जैव विविधता और पर्यावरण प्रबंधन प्रभाग के प्रधान वैज्ञानिक और प्रमुख डॉ. ग्रिंसन जॉर्ज ने भारत की रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसमें शामिल थे राष्ट्रीय संरक्षण प्राथमिकताएँ और लक्ष्य। रिपोर्ट में समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र को बहाल करने के प्रयासों के हिस्से के रूप में पानी के नीचे मूंगा छवियों को वर्गीकृत करने के लिए एक गहन शिक्षण-सक्षम छवि पहचान मॉडल विकसित करने में सीएमएफआरआई के शोध पर प्रकाश डाला गया। डॉ. ग्रिंसन जॉर्ज ने मन्नार की खाड़ी, कच्छ की खाड़ी और लक्षद्वीप क्षेत्रों में प्रत्यारोपण के माध्यम से मूंगा चट्टान की बहाली का उल्लेख किया। इसमें उत्तरी हिंद महासागर क्षेत्र में जलीय आक्रामक प्रजातियों के स्थानिक वितरण को मैप करने के सीएमएफआरआई के प्रयासों का भी उल्लेख किया गया है।